

DPN 6283

Title : लक्ष्मीपूजा विधि LAKṢMĪ PŪJĀ VIDHI

Run. No. 6974

Cat. No. 15

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 20 × 8.5

Folios 34

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 992

Ruler / place

Rajendra Shreshtha

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री लक्ष्मी देव्यै नमः ॥ अथ लक्ष्मी पूजा विधि लिखते ॥ ॥ पतुवाशन
चोय ॥ देवीया जवस पंचबालि, सगोन तय ॥

P. T. O.

15
10
5
0
CMS

Δ इति लक्ष्मी पूजादिधि संपूर्णम् ॥ ॥ संवत् ५५२ श्रावणा कृष्णा १ रोज २
२४ कुन्दु चोय सिद्धयका ॥

5 10 15 20

१ लक्ष्मी पूजा पुस्तकं

15 श्रीगणेशायनमः॥ ॥ श्रीलक्ष्मीदेव्यै नमः॥ अथ ल
क्ष्मीपूजाविधिलिखते॥ ॥ पतुवाशनवोय॥ देवीयाज
नवस. पंचवलि. सगोन. वय॥ कलश. द्रुस्क. सहित. बोधे
देवया. खवस. कुम्भ. नरुजोलं. त्रिवलि. सिद्धमूल. बोधे
वादा. किदा. जव. खवस. बोय॥ वन्दन. सिंदूर. जजंक

10 स्थान. आदि. देवयात. खेले॥ मयमानेन. त्रिरावम्य॥ प्र
पभाजनयाचवे॥ अद्यादि॥ वाक्य॥ सिद्धिरस्तु विष्णवे
५ भे॥ यजमानस्य भुति. स्मृति. पुराणोक्त. फलप्राप्त्यर्थं
दोसकाले. ग्रामावास्था. चर्वणि. वरुधन. धान्य. वृद्धि. क
मा नः लक्ष्मीपूजातिमित्यर्थं. पुष्पभाजनं समर्पयामि॥ ३

15
केगोड. त नाव. ब्राह्मण. यात. पूजा. लव. हूय ॥ ब्राह्मणेन.
सूर्यार्घ्यकारयेत् ॥ अद्यादि ॥ यजमानस्य बहु धन धान्य
संपत्ति वृद्धि कामः अमावास्या पुन्ये सकाले लक्ष्मी स्थाप
न. पंचोपचार सहित लक्ष्मी पूजन. निमित्त्यर्थं बहूनां
वे अर्घ्यनमः ॥ अग्निर्मुद्गुदिवः ॥ गुरुनस्कार ॥ अथ

10
रुमराउलाकारेति ॥ गायत्री न्यासः ॥ शंखार्घ्यपात्रपूजा
गंगेव जमुन. इत्यादि ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ विष्णुवेनमः ॥ रुद्र
यनमः ॥ आवाहनादियन्त्राक्षतपुष्पं नमः ॥ सोधन ॥
5 १० ॥ धेनुमुद्रां दर्शयेत् ॥ थलं खन. थवत. पूजा. सामाग्री
होय ॥ अपवित्र पवित्रीता ॥ भूतभृदि ॥ आत्मपूजा ॥

15
प्राणाग्राम ॥ यं १० रं १० वं १० ॥ न्यासः ॥ प्राणाप्रतिष्ठा ॥
ॐ श्रीं ह्रीं कौं लक्ष्मी देव्यै नमः ॥ अथ ऋषिद्वन्द्वः ॐ अस्य
श्री लक्ष्मी मंत्रस्य भृगु ऋषिर्निवृत्तिद्वन्द्वो लक्ष्मी देवी शं
वी जं इंशक्तिः रं कीलकं मम सर्वार्थसाधने विनियोगः
नमस्काराय ॥ अथ ग्रंथन्यासः ॥ आदौ मोडस्य स्थिय ॥

10
5
ॐ भृगु ऋषये नमः ॥ मुखे ॥ ॐ निवृत्तिद्वन्द्वे नमः ॥ हृ
दये ॥ ॐ लक्ष्मी देवतायै नमः ॥ गृह्ये ॥ ॐ शं वी जायै नमः ॥
पादयोः ॥ ॐ इंशक्तये नमः ॥ सर्वार्थे ॥ ॐ रं कीलकाय न
मः ॥ हाथ जो जलपावणेने ॥ मम सर्वार्थसाधने विनियो
गः ॥ ॥ अथ करन्यासः ॥ शौं ग्रं गुह्या न्यासः ॥ शीत र्जनी

15
भ्यां नमः॥ ॐ मध्यमाभ्यां वौषट्॥ शौं अनामिकाभ्यां हूं॥ शौं
कनिकाभ्यां वषट्॥ शः करतरपुष्पाभ्यां त्रैफट्॥ हृदया
दि॥ शौं हृदयाय नमः॥ शौं शिरसे स्वाहा॥ ॐ शिखायै वौ
षट्॥ शौं कवचाय हुं॥ शौं नेत्रत्रयाय वषट्॥ शः अस्त्राय
फट्॥ इति षडंगन्यासः॥ अथ अर्घ्यपात्रपूजा॥ रं वंदि मः

10
5
सुलाय दशकलात्मने नमः॥ षडंगपूजा॥ आवाहनादिव
चजाक्षतपुष्पं नमः॥ मूलेन जपेत् १०॥ फट्॥ हुं अक्षुं ठ
नं॥ धेनुमुद्रा॥ इत्यर्घ्यपूजा॥ च्चलं खन हारं स हाय॥ अ
हारदेवतायै नमः॥ ॥ देवीयापीथपूजा॥ ॐ आधारश
क्तये नमः॥ कर्मात्मनाय०॥ अनन्ता०॥ वराहाय०॥ पृथि

वैः०॥ क्षीरसिंधवे॥ रत्नदीपायै०॥ मणिमराउपायै०॥ क
ल्पवृक्षाय०॥ धर्माय०॥ ज्ञानाय०॥ वैराग्याय०॥ ऐश्वर्या
य०॥ अनेश्वर्याय नमः॥ इत्यादि॥ विभूत्यादि नव
शक्तिभ्यो॥ पद्माशनाय नमः॥ कूर्माशनाय नमः॥ अ
थ ध्यानं॥ काजाकाय नमः॥ हिमगिरिप्रख्यै श्रुतुं

भिः भुजैः हस्तोऽक्षि प्रहिरन्मया मृतघटे रासिं या माना
श्रियं॥ विभ्राणा वरमद्भुतं गुणमभयं हस्तैः किरीतो ज्वला
क्षौमा बहुजितं वविंवरलितं वन्दे रविन्द स्थितां॥ ॥ उं
भूर्भुवः स्वः लक्ष्मी इहा गच्छ २ इह तिष्ठ २ इह संनिहि
त भव २ इह संनिरुद्धा भव २ मम पूजा गृहान स्वाहा॥

॥ प्राणप्रतिष्ठा ॥ ॐ श्रीं ह्रीं कौं लक्ष्मी देव्याः सर्वेन्द्रिया
निर्इहागत्य सुखं विरतिं च नुस्वाहा ॥ आवा हनादि ॥ पा
प्रादि च ननादि नाना उपवा रादि सर्वे ददेत् ॥ त्रिं योज
लि ॥ ॐ श्री लक्ष्मी देव्यै नमः ॥ वलिं गुरुस्वाहा ॥ वडं
गपूजा ॥ ॐ श्रीं हृदयादि ॥ इदं वलिं ॥ अक्षपत्र

स ॥ ॐ अनमो भगवते वालु देवाय नमः ॥ ॐ भगव
ते संकर्षणाय नमः ॥ ॐ ॐ अनमो भगवते प्रद्युम्नाय
य नमः ॥ ॐ ॐ अनमो भगवते अनिरुद्धाय नमः ॥ ॥
आग्नेयकोने ॥ ॐ दमकाय नमः ॥ ॐ सलिकायैः न
मः ॥ ॐ गुगुणाय नमः ॥ जवसदेवी पूजा ॥ ॐ शंख

15
निधिदर्पिताभ्यां नमः॥ देवीयाखवसपूजा॥ उं पद्म
निधिप्रियाभ्यां नमः॥ दलायेपूजा॥ उं दलाये न
मः॥ उं विमलाये नमः॥ उं कामलाये नमः॥ उं वन
मालिकाये नमः॥ उं विभीरिकाये नमः॥ उं मालि
काये नमः॥ उं शंकर्ये नमः॥ उं वसुमालिकाये न

10
मः॥ ॥ लुं ईश्वराय नमः॥ हं अग्नये नमः॥ मूं यमा
य नमः॥ हूं नैऋते नमः॥ वूं वरुणाय नमः॥ यूं
5
वायवे नमः॥ लूं कुवेराय नमः॥ हं ईशानाय नमः॥
ओं अनन्ताय नमः॥ उं ब्रह्मणे नमः॥ ध्वनपि वः
नेपूजा॥ वूं वज्राय नमः॥ शं शक्रये नमः॥ टं टं

15
डायनमः॥ खैखण्डायनमः॥ पौषाशायनमः॥ अं अं
कुशायनमः॥ गंगडायनमः॥ भुंभूलायनमः॥ वंच
कायनमः॥ पंपुषायनमः॥ ॥ पुनः सधोपूजयेत्
ॐ लक्ष्मीनमः॥ ॐ पद्म लयायेनमः॥ ॐ श्रियेनमः॥
ॐ कमलायेनमः॥ ॐ हरिप्रियायेनमः॥ ॐ इन्दिरा

10
येनमः॥ ॐ लोकमात्रेनमः॥ ॐ मायायेनमः॥ ॐ
क्षीराब्धितनयायेनमः॥ ॐ रमायेनमः॥ ॐ धनदाये
नमः॥ ॐ धान्यदायेनमः॥ ॐ श्री. लक्ष्मीभ्यांनमः॥ ॐ
5 वागीश्वरी. सरस्वतीभ्यांनमः॥ ॐ कान्ति. दान्तिभ्यांन
मः॥ ॐ क्रिया. कान्ताभ्यांनमः॥ ॐ शान्ता. दान्ताभ्यां

नमः॥ ॐ धृति. विधृति भ्यां नमः॥ ॐ ईच्छा. अतिच्छा
भ्यां नमः॥ ॐ पृति. अतिपृति भ्यां नमः॥ ॐ रति. धृ
तिभ्यां नमः॥ ॐ माया मोहिताभ्यां नमः॥ ॐ धीम
ता. धर्मदाभ्यां नमः॥ ॐ महिमा. प्रतिमाभ्यां नमः॥
ॐ लक्ष्मी नमः॥ ॥ जयादिपूजा ॥ ॐ जयाये नमः॥

ॐ विजयाये नमः॥ ॐ अजिताये नमः॥ ॐ अपराजि
ताये नमः॥ ॐ जम्भये नमः॥ ॐ लम्भये नमः॥ ॐ
मोहिने नमः॥ ॐ कर्षणे नमः॥ आवाहनादि॥ ॥
ततो विष्णुपूजा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णोः इहा गच्छ
इह तिष्ठ २॥ एतानि पाद्यार्घ्याय मनीयं स्नानं वन्द्य

न.प्रक्षत पुष्पाणि. विष्णवे नमः॥ अथ पूजा॥ ॐ ह्रीं
सः विष्णवे नमः॥ आवाहनादि॥ इदं वलिं गृह्ण २ स्वाहा
॥ ॐ नः द्वादश मूर्ति पूजा॥ ॐ केशवाय नमः॥ ॐ ना
रायणाय नमः॥ ॐ माधवाय नमः॥ ॐ गोविन्दाय न
मः॥ ॐ विष्णवे नमः॥ ॐ मधुसूदनाय नमः॥ त्रिविक्र

माय नमः॥ ॐ वामनाय नमः॥ ॐ श्रीधराय नमः॥
हृषीकेशाय नमः॥ ॐ पद्मनाभाय नमः॥ ॐ दामोद
राय नमः॥ ॐ पुरुषोत्तमाय नमः॥ ॥ अथ त्रिपां
जलि॥ ॥ ॐ ह्रीं सः नमो नारायणाय विश्वात्मने नमः
३॥ इदं वलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ तत्सत् नमो ब्रह्मणे

15
तत्सत्तनमः॥ ॐ हं नमो विष्णवे हूं नमः॥ ॐ डं रं मं
गं रं वं शं अस्तपत्रांतरस्थेभ्यो नमः॥ ॐ डं कं टं पं
शं नै नतेयाय नमः॥ ॥ तत कुवेर पूजनं ॥ ॐ भू भु
वः स्वः कुवेर इहा गच्छ २ इति ४ ॥ सतानि पाद्या
र्घ्यवसनीयस्नानवन्दना धृत पुष्पं कुवेराय नमः

10
त्रियांजलि॥ ॐ संपु कुवेराय नमः ३ ॥ धनदाय नमः
स्तुभ्यं निधिपद्माधियाय च॥ भवन्तु त्वत्प्रसादेन
5 धनधान्यादित्यं पदं॥ इति कुवेर पूजा॥ धनधत्तप
रिवारमालकोपूजायाय जुल॥ ॥ धनसगुरा पूजा
याय॥ ॐ अश्वत्थामाय नमः॥ ॐ वलये नमः॥ ॐ ॐ

या

व्यासाय नमः॥ ॐ हनुमते नमः॥ ॐ विभीषणाय नमः॥
ॐ कृपाचार्याय नमः॥ ॐ परसुरामाय नमः॥
मार्कण्डेय नमः॥ ॐ इन्दुवे नमः॥ ॐ वराहय नमः॥
निशानाथाय नमः॥ ॐ शीतांशाय नमः॥ ॐ शशलांछ
नाय नमः॥ ॐ मृगांकाय नमः॥ ॐ चन्द्रमले नमः॥ ॐ

लोमाय नमः॥ ॐ विधवे नमः॥ ॐ तारापतये नमः॥
शशिवे नमः॥ ॐ औषधीशाय नमः॥ ॐ सुव्राय नमः॥
भूपतये नमः॥ ॐ द्विजराजाय नमः॥ ॐ सुधांशवे नमः॥
ॐ संपूर्णवन्द्याय नमः॥ आवाहनादि॥ ॥ त
तः कलशपूजा॥ ॐ आधारशक्तये नमः॥ ॐ वृषभा

15
शनायनमः॥ ॐ सिंहाशनायनमः॥ ध्यानं॥ वृषसिं
हस्थितं देवं क्षीरकुरेण्डुसंनिभं॥ एकवक्त्रं त्रिनेत्रं वः
वतुर्भुजं महेश्वरं॥ त्रिशूलाक्षधरं देवं वरं कलशधा
रिणं॥ वामोरुस्थिता देवी द्विभुजा कलशावरा॥ हेमा
नरणाभूषांगी श्वेताम्बरविभूषणा॥ एकामृतीश्वरं

10
ध्यात्वा सर्वपापप्रणाशनं॥ कलशाय ध्यानपुष्पं नमः
एवं पाद्यादिचन्दनाक्षतपुष्पं नमः॥ त्रियांजलि॥ ॐ हं
२ सं २ संपूर्णकलशाय नमः॥ जयाय शक्तिसहितायः
त्रियांजलिपुष्पं नमः॥ ३॥ इदं त्रिलिङ्गं २ स्वाहा॥ गण
देवतापूजा॥ रुद्रचंद्रादिभ्यो नमः॥ ॐ ब्रह्मा न्यादिभ्योः

नमः॥ ॐ सप्तसागरेभ्योनमः॥ ॐ सप्तगन्धकीभ्योनमः॥
ॐ गंगाजमुनाभ्यां नमः॥ ॐ वाग्मती सरस्वतीभ्यां नमः॥
सर्वसागरेभ्योनमः॥ आवाहनादि॥ इदं वलिं गृह्णन्त्याह
इति कलशपूजा॥ ॥ तत कुम्भपूजा॥ ॐ वाँ हृदयादि न्या
सः॥ ॐ आधारशक्तिभ्योनमः॥ ॐ ऐं कारासनाय पां

दुकां पूजयामि॥ भ्यानं॥ ॐ लाक्षारसशिभादेवी पद्मराग
समप्रभा॥ सर्वरत्नविविञ्जो गी. अवि काभूतविग्रहा॥
अष्टादशभुजं देव्या नानास्त्रोपसंभिता॥ नानारश
धरी देवी. त्रैलोक्येनाम्यविद्यते॥ खड्गपाशकुशासः
व्यो. कपालकुलिशध्वजं॥ रथांगश्च तथा चराण्यनवम

15
सूवरप्रदं॥ फटकधनुपाशान्ध खलवाङ्गसकमराउ लुं॥
शूलमुङ्गलवेनुच देव्यागरातिवो तरे॥ मराउ लंवे द्यः
यित्वातु नदीभूमि विसर्पिता॥ यस्य तीपाट कनसर्वा
न सर्वा न चान्तकोट्भवो॥ ध्यानपुष्पं नमः॥ त्रियांज
लि॥ ॐ ऐं ५ ह्रीं ह्रीं स २ ह २ लं लं लं लं लं पञ्च रः

10
5
त्रायैः कुलकूम्भ भन्ना रकायै पादुकां पूजयामि ३॥ इदं
वलिंगरुद्रस्वाहा॥ अथ परिवारपूजनं॥ ॐ रुद्रवाङ्माः
दिभ्यो पादुकां पूजयामि॥ ॐ जयादिभ्यो पादुकां पूजया
मि॥ ॐ ब्रह्मा न्यादिभ्यो पादुकां पूजयामि॥ ॐ वां रुद्रया
दि ६॥ इदं वलिंगरुद्रस्वाहा॥ योनिमुद्रा॥ आवाहना

15
दि॥ विलु ३॥ इति कुम्भपूजा॥ ॥ नाना उपवारादि
सोधन याना वच्छाय॥ बलुन सोधन पूजा॥ धन वलि
मुले॥ वलिं गुरु स्वाहा॥ पाद्यादि च नृनाक्षत पुष्पधू
पदी पंददेत्॥ नैवेद्य फलता मूलादि पक्वान्न यथा
शक्तिसर्वं ददेत्॥ इदं फलपुष्पधूपदीपनैवेद्यादिसं

10
कल्पसिद्धिरसु॥ ॥ ततो वेदार्चनं॥ ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं
ॐ इदं विष्णुः॥ ॐ श्री श्रुते॥ ॐ कुविदं गजवसनो॥ ॐ
5
आजिष्मकलशं॥ ॐ ब्राह्मणसः॥ ॐ अमे अमि के॥
ॐ विश्वतश्चक्षुरतो० इति वेदार्चनं॥ लाजाक्षेपनं॥ मनो
जूति प्रतिष्ठा॥ जाप॥ ॐ श्री स्वाहा॥ १०८॥ गुह्यादुगु



15

10

5

5

10

15

20

15
ह्यगोपवित्त्वं त्यादि ॥ मण्डल ॥ स्तोत्रं ॥ लक्ष्मीदेव्यै नमः ॥
लक्ष्मी ॥ मिन्दूरपूरे हरि हृदये रता सर्वसम्पत्तिदाता ॥
कारुण्यादृष्टिपाते जगति भुवि नृणां सर्वदारिद्र्यहन्त्री
॥ चैलाक्ये माभूता कमलवनवरे वाश्रयाराजगेहे ॥ तादे
वीनोमिनित्यां प्रतिदिनशिरसा सांप्रतं विष्णुकान्तां ॥ ३

10
5
विष्णुस्य ॥ ॐ साक्षात्कारेति ॥ कुवेरस्य ॥ ॥ ॐ कलश
स्य ॥ ॐ रत्नौषधीसकलतीर्थजलेन पूर्णं स्वच्छत्रपद्म
वसुशोभितपुष्पमालं ॥ यज्ञेषु यागविषये मुनिभिः
प्रशस्तं तं कुम्भमूर्तिं शिवशक्तियुतं नमामि ॥ अस्त
विरंजीवि ॥ ॐ अश्वत्थामावलिक्कीलो हनुमांश्च विभी

15
षरा॥ कपः परं रामश्च मार्कण्डेयायते नमः॥ गरु
शस्य॥ ॐ विष्णेश्वरा॥ कुम्भस्य॥ ॐ सर्वमंगलेति॥ स
कलदेवेषु यथाशक्तिसोत्रं कारयेत्॥ मराठलस्य पु
ष्पशिरसि भूषणं॥ देवदक्षिणं ददेत्॥ क्षमास्तुति॥
ॐ जदक्षरपदभक्तं॥ ॐ अपराठसहस्राणि॥ ॐ अन्

10
त्रशरणां नास्ति॥ देवाशीर्वादा॥ ॐ श्रीश्रुते लक्ष्मी॥ आ
त्माशीर्वादा॥ ॐ रुकाने के तित्यादि॥ ॐ अस्मि पूर्वगतं इ
त्यादि॥ सर्वजनानां वन्दन पुष्पादि देवस्य ग्राह्यं॥ गो
प्येतात्प्यं कारयेत्॥ न्यासं कारयेत्॥ सूर्यसाक्षि॥
5 श्रीलक्ष्मीदेवी पूजितो सिन्धु क्षमस्व॥ ॐ विष्णु ३॥ दि

15
हिंदिया नित्य पूजाया यमाल ॥ पेङ्गु खुनु चतुर्थी पूजा
या नाव वलि थो य ॥ देवादि स्वस्थान या य ॥ श्री लक्ष्मी
नारायणादि सगरा देवाः स्वस्थान वा सो भवतु ॥ आ
वम्य ॥ विष्णु ३ ॥ इति लक्ष्मी पूजा विधि संपूर्णम् ॥ ॐ ॥
संवत् १९२२ श्रावण कृष्ण १ रोज २ चतुर्दश्याय सिद्धयका ॥

15

10

5

5

10

15

20

15

10

5

5

10

15

20



15

10

5

5

10

15

20

5
40
25
0

